International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 20-02-2024, Accepted: 13-03-2024, Published: 04-04-2024
Volume 10, Issue 2, 2024, Page No. 1-3

केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में सामाजिक, राजनैतिक और मार्क्सवादी चेतना

बबली पण्डाग्रे
रिसर्च स्कॉलर, हिन्दी विभाग, बरकरउल्ला विष्वविद्यालय, भोपाल मध्यप्रदेश, भारत

सारांश
आधुनिक काल के प्रगतिवादी कवि केदारनाथ जी अग्रवाल का काव्य जगत बहुत ही विराट और महान है। उनका कवि हृदय समाज की हर छोटी–बडी समस्या के प्रति संवेदनशील दिखाई देता है। प्रारंभ में वे एक रोमांटिक कवि थे लेकिन समय के साथ–साथ वे जनसामान्य से जुडते चले गए। केदारनाथ जी के काव्य मे भावभूमि और विचारभूमि के विभिन्न रुप देखने को मिलते है। राष्ट्र और समाज की व्यवस्था के प्रति उनका मोहभंग उनकी कविता में उभरकर सामने आया है। हिन्दी के प्रगतिवादी कवि केदारनाथ अग्रवाल यथार्थ जीवन के संघर्ष को सहजता से देखते है। केदारनाथ जी के काव्य में किसानो की दयनीय दशा, किसानो की गरीबी व बेरोजगारी का चित्र देखने को मिलता है। वे किसानो की दयनीय स्थिति के लिए पूँजीपतियों, सूदखोरो, मिलमालिको और राजनेताओ को दोषी मानते है। कवि केदारनाथ जी ग्रामीण परिवेश के कवि है। लोकजीवन से उनका गहरा नाता है।वे स्वयं कहते है कि ''मै गॉव का आदमी हूँ और शहर में रहते हुए भी मै अपने गॉव को नही भूल पाया हूँ। मेरी जडे आज भी गॉव में है। उनकी कविताओं में ग्रामीण परिवेश, किसानों का उल्लास–विषाद, राग–विराग की धडकनों को सुना जा सकता है। गॉव की नदी, तालाब, बाग–बगीचे, जंगल, पशु–पक्षी, पुल, गॉव की फसले, धूल आदि उनके जीवन के अंग बने रहे। जिसका प्रयोग वे अपनी कविताओं में बिम्बों और प्रतीकों के रुप में करते रहे। उनकी कविताओ में प्रकृति का अनूठा चित्रण देखने को मिलता है। केदारनाथ जी अपनी कविता मे राजनेताओ में व्याप्त भ्रष्टाचार का भी चित्रण करते है। वे अपने देश की आर्थिक स्थिति और आर्थक दुर्दशा से भी दुखी दिखाई देते है। किसानो और शोषितों की आर्थिक बदहाली का चित्रण भी उनके काव्य में हुआ है। केदारनाथ अग्रवाल मार्क्सवादी–साम्यवादी विचारधारा के कवि है। उनकी कविता में नारी के प्रति भी सदभावना को व्यक्त किया गया है। वे नारी के प्रति समान अधिकार के पक्षधर है। अतः समाज में शोषक वर्ग और शोषित वर्ग के बीच की खाई को मिटाना ही शोध का प्रयोजन है।

मूल शब्दः केदारनाथ अग्रवाल, भावभूमि और विचारभूमि, नारी के प्रति समान

हिन्दी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल के प्रगतिवादी कवि केदारनाथ जी अग्रवाल ने अपने काव्य में मार्क्सवादी विचारधारा को उभारा है। तत्कालीन समाज में होने वाले भेदभाव का खंडन किया है। अपने समय मे घटित होने वाली घटनाओ के कविता के माध्यम से व्यक्त किया है। समाज के घटने वाली घटनाओ के प्रकृति के माध्यम से प्रतीकों व बिम्बों के माध्यम से व्यक्त किया है। किसानो को गरीबी और कर्ज पैतृक संपति के रुप में मिलती है जिसका चित्रण करते हुए वे कहते है–

जब बाप मरा तब पाया
भूखे किसान के बेटे ने
घर का मलवा, टूटी खटिया
कुछ हाथ भूमि, वही भी परती
बस यही नहीं, जो भूख मिली
सौ गुनी बाप से अधिक मिली
वह क्या जाने आजादी क्या ?
आजाद देश की बाते क्या ?

कवि ने अपने समाज में देखा कि एक वर्ग सुख भोग रहा है और दूसरा वर्ग दुःख भोग रहा है। एक ओर सुखी वर्ग घी–शक्कर का आनंद लेते है तो दूसरी ओर दुखी वर्ग रोटी के लिए तडपता हुआ अधपेट रहता है। उन्होने लिखा है–

एक रोटी के लिए तडपे
सदा अधपेट खाए
दूसरा घी–दूध–शक्कर का मजा भरपेट पाए
मै इसे विधि नहीं, अभिशाप जग का मानता हूँ।

कवि केदारनाथ जी ग्रामीण परिवेश के कवि है। लोकजीवन से उनका गहरा नाता है।वे स्वयं कहते है कि ''मै गॉव का आदमी हूँ और शहर में रहते हुए भी मै अपने गॉव को नही भूल पाया हूँ। मेरी जडे आज भी गॉव में है। उनकी कविताओं में ग्रामीण परिवेश, किसानों का उल्लास–विषाद, राग–विराग की
धडकनों को सुना जा सकता है। गॉव की नदी,तालाब, बाग–बगीचे, जंगल, पशु–पक्षी, पुल, गॉव की फसले, धूल आदि उनके जीवन के अंग बने रहे। जिसका प्रयोग वे अपनी कविताओं में बिम्बों और प्रतीकों के रुप में करते रहे। उनकी कविताओ में प्रकृति का अनूठा चित्रण देखने को मिलता है।केदारनाथ जी अपनी कविता मे राजनेताओ में व्याप्त भ्रष्टाचार का भी चित्रण करते है। वे अपने देश की आर्थिक स्थिति और आर्थक दुर्दशा से भी दुखी दिखाई देते है। किसानो और शोषितों की आर्थिक बदहाली का चित्रण भी उनके काव्य में हुआ है। केदारनाथ अग्रवाल मार्क्सवादी–साम्यवादी विचारधारा के कवि है। उनकी कविता में नारी के प्रति भी सदभावना को व्यक्त किया गया है। वे नारी के प्रति समान अधिकार के पक्षधर है।
राजनीति के क्षेत्र में भी वे बडे–बडे अधिकारियों पर व्यंग्य करते हुए कहते है कि

''हम बाण मारते है, ना सॉप मरता है शैतान
हम हो गए है परेशान, हमें मारे डालते है सॉप और शैतान''

राजनैतिक क्षेत्र मे वे बताते है कि आज के मानव के लिए पैसा ही सबकुछ है। आज रिश्तेदार– नातेदार और बाप, भाई, बहन, मॉ कोई भी महत्व नही रखता है केवल पैसा ही सब कुछ है– वे कहते है–

आज पैसा है दिमाग मे वैसे, हरे खेत में सुअर जैसे
आज बाप, बाप नही, पैसा ही अब बाप हैं।
पैसो की ही सुबह और पैसो की ही श्याम है
दोपहर की भागदौड पैसा है, पैसो से ही भरी रात है।
आज बाप, बाप नही, पैसा ही अब बाप है।।

अपनी एक कविता हम–तुम मे वे यौवन और बुढापा का वर्णन करते हुए कहते है कि

सत्ताइस साल में तुम, ना तुम रहे ना तुम, ना हम रहे ना हम
तुम हो गए हो खूखॅार, हम हो गए है बीमार अभावग्रस्त लाचार।

एक स्थान पर वे कहते है कि

आज नदी बिल्कुल उदास थी,
साई थी अपने पानी में
मैने उसे नही जगायाख्
दबे पाव घर वापस आया
दबे पाव घर वापस आया

साहित्य समीक्षा (Literature Review)

केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में पद्य साहित्य पर अभी तक बहुत से शोध कार्य हो चुके है। केदारनाथ जी अग्रवाल के साहित्य का पुनरावलोकन करने पर मैने पाया कि केदारनाथ अग्रवाल के सामाजिक, राजनैतिक और मार्क्सवादी चेतना पर अभी तक कोई विशेष काम नही हुआ है। अतः मै इस शीर्षक पर अपना शोध कार्य कर रही हॅू। यह मेरा अपना मौलिक कार्य है।

1. इसी संदर्भ में डॉ. अवनिश कुमार द्वारा बनारस हिन्दू विष्वविद्यालय उत्तर प्रदेश की पीएचडी उपाधि के लिए वर्ष 2020 में प्रस्तुत शोध कार्य 'केदारनाथ अग्रवाल के काव्य का शैलीवैज्ञानिक अध्ययन' उल्लेखनीय है। इन्होने अपने शोध कार्य 'केदारनाथ अग्रवाल के काव्य का शैलीवैज्ञानिक अध्ययन' में बताया कि केदारनाथ जी ने अपने काव्य की रचना के लिए कौन–कौन सी शैली की सहायता ली है। विवरणात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली, चित्रात्मक शैली आदि का प्रयोग केदारनाथ जी ने अपने काव्य में किया है।
2. इसी संदर्भ में डॉ. सीमा राय वी.बी.एस. पूर्वाचल विष्वविद्यालय में पीएचडी उपाधि के लिए वर्ष 2017 में प्रस्तुत शोध कार्य 'प्रगतिशील काव्य आंदोलन और केदारनाथ अग्रवाल' उल्लेखनीय है। इन्होने अपने शोध कार्य' प्रगतिशील काव्यांदोलन और केदारनाथ अग्रवाल' में बताया कि प्रगतिवादी कवियों ने शोषक वर्ग व शोषित वर्ग के बीच की खाई मिटाने के लिए कई आंदोलन किए। वे शोषित वर्ग की दयनीय स्थिति का वर्णन अपने काव्य में करते है। ग्रामीणों की दयनीय दशा व नारी की दयनीय स्थिति का वर्णन भी वे अपने काव्य में किया है।
3. इसी संदर्भ में डॉ. बिमलेश कुमार त्रिपाठी द्वारा कलकत्ता विष्वविद्यालय में पीएचडी उपाधि के लिए वर्ष 2017 मे प्रस्तुत शोध कार्य' केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में लोकसंस्कृति और आधुनिकता' उल्लेखनीय है। इन्होने अपने शोध कार्य 'केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में लोकसंस्कृति और आधुनिकता 'में बताया कि तत्कालीन समाज में जाति प्रथा, धर्म, छूआछूत आदि का भेदभाव निहित था। लोग जाति प्रथा के आधार पर एक दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश कर रहे थे। उच्च वर्ग की जाति के लोग निम्न वर्ग की जाति के लोगो को दबाते थे। छूआछूत की भावना तेजी से फैल रही थी। उॅची जाति के लोग निम्न जाति के लोगो के हाथ का पानी भी नही पीते थे। इस प्रकार उस समय के समाज का वर्णन किया गया है। वर्तमान समय मे इन सभी में बदलाव देखने में आया है।

शोध पद्वति (Research methodology)

किसी शोध को पूरा करने के लिए किसी न किसी शोध प्रविधि का प्रयोग किया जाता है। शोध की यद्यपि बहुत सी प्रविधि होती है परन्तु प्रत्येक शोध अलग–अलग प्रकार का होता है। अतः शोध कार्य के लिए शोध प्रविधि भी अलग–अलग होती है। शोध को पूरा करने के लिए मात्रात्मक अनुसंधान विधि, गुणात्मक अनुसंधान विधि, विवरणात्मक अनुसंधान विधि, विश्लेषणात्मक अनुसंधान विधि, अनुप्रयुक्त अनुसंधान विधि, आधारभूत अनुसंधान विधि, अवधारणात्मक अनुसंधान विधि, नैदानिक अनुसंधान विधि, ऐतिहासिक अनुसंधान विधि आदि का प्रयोग किया जाता है।

प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी द्वारा शोध की विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। विश्लेषणात्मक अनुसंधान में शोधकर्ता को सर्वप्रथम संबंधित विषय अथवा घटना के बारे में जानकारी संकलित करनी होती है। इसके बाद जानकारी के आधार पर ही संकलित की गई सामग्री का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता है। पूर्व में एकत्रित किए गए तथ्यों, आंकडों, विचारों आदि से परे अंतदृष्टि रखते हुए एक समाज–विश्लेषक का मानना होता है कि संचित तथ्यों व आंकडो के पीछे की कहानी कुछ और ही होती है। अतः उस छिपे हुए संदर्भो को तलाशने में एक विश्लेषक की अधिक रुचि होती है। इसके पीछे तर्क यह है कि संग्रहित तथ्यों व आंकडों को जब सामग्री से संबंधित अन्य चरों के साथ जोडा जाता है तो एक व्यापक और परिष्कृत अर्थ उभरकर सामने आता है तथा इस प्रस्तुत अर्थ की सहायता से एक वैध सामान्यीकरण प्रस्तुत करना सरल हो जाता है। प्रस्तुत शोध–प्रबंध के लिखने मे अनेक शोध प्रविधियॉ प्रयुक्त हुई है। प्रस्तुत शोधकार्य के लिए उपन्यासो,शोध ग्रन्थो,पुस्तको और विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं के अध्ययन अनुशीलन द्वारा तथ्य संकलन,विवेचन एवं निष्कर्ष निरुपण की प्रविष्टियां प्रयुक्त है। साम्रगी के संकलन मे विभिन्न संग्रहालयों और ग्रन्थालयों की यात्राएं भी हुई है। शोध की साम्रगी एकत्रित करने हेतु विभिन्न जानकार महापुरुषो से भी संपर्क हुआ है। शोध क्रिया पर आधारित सामाजिक विश्लेषण की प्रक्रिया एक निरंतर क्रियाशील रहने वाली प्रकिया होती है। यह क्रमबद्व विश्लेषण एक ऐसा बौद्विक फलक तैयार करता है, जहॉ छॉटे हुए तथ्यों और आंकडो को व्यवस्थित रुप से रखा जाता है, ताकि शोधकर्ता उनकी मदद से एक वैध अनुमान तक पहुॅच सके। तथ्य स्वयं अपनी अभिव्यक्ति प्रकट करने हेतु योग्य बनाया जाता है। सामाजिक विश्लेषण हेतु संकलित की गई सामग्री की व्यापक और सटिक जानकारी की आवश्यकता होती है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि केदारनाथ अग्रवाल जी प्रगतिशील धारा के कवि है। आजादी के पूर्व से लेकर सन् 2000 तक वे अपनी काव्य यात्रा में लगे रहे। उनकी राजनैतिक दृष्टि मार्क्सवादी विचार दर्शन से प्रभावित रही है। केदारनाथ जी ने राजनैतिक कविताऍ लिखी है जिसमें 40 वर्षो का राजनैतिक इतिहास कैद है। केदारनाथ अग्रवाल आम जनता के कवि है। राजनैतिक कविताओ के अतिरिक्त केदारनाथ जी ने संघर्षशील मानव के बारे में भी लिखा है। प्रगतिशील कवियों की भाषा का सबसे बडा गुण संप्रेषणीयता होता है। सारांशतः केदारनाथ अग्रवाल इस देश के श्रमशील मनुष्य के सुख–दुख की वाणी देने वाले प्रमुख प्रगतिशील कवि है। केदारनाथ जी काव्य की सबसे बडी विशेषता नैतिकता के प्रति उनकी आस्था है। उनकी यह आस्था इस जगत को आर्कषक बनाने के लिए हमेंशा प्रयत्नशील

रही है। उनकी कविता में यथार्थ का चित्रण सर्वाधिक रुप से देखने को मिलता है। उनके यथार्थ से दो बाते निकलकर सामने आती है पहली यह कि कविता यथार्थ के बिना जीवित नहीं रह सकती और दूसरी यह कि यथार्थ के बिना वह विचार परंपरा से जुडी नही रह सकती है। कविता को एक आवश्यक मुक्ति चाहिए इसलिए संसार के सारे कवि एक विचारधारा से जुडे होने के बाद भी एक जैसी कविता नही लिख पाते है।

सारांश रुप में कहा जा सकता है कि प्रगतिवादी कवि केदारनाथ अग्रवाल जी ने तत्कालीन समाज का असली मुखौटा समाज के सामने लाया। तत्कालीन समाज मे होने वाले भेदभाव व भ्रष्ट्राचार को अपने गीतो के माध्यम से व्यक्त करने है। समाज में नारी की स्थिति और गरीब किसान व श्रमिकों पर होने वाले अत्याचार को भी वे अपने काव्य में कविताओं के माध्यम से उजागर करते है। उन्होने अपनी वेदना को प्रकृति के माध्यम से बयान किया है।

इस प्रकार प्रकुति का सहारा लेकर वे अपनी वेदना को व्यक्त करने है। वे शोषक वर्ग और शोषित वर्ग के बीच की खाई को मिटाना चाहते थे। इस खाई को मिटाने का उन्होने भरसक प्रयास भी किया।

सन्दर्भ सूची

1. केदारनाथ अग्रवालः पुष्पदीप, पृष्ठ सं, 21
2. केदारनाथ अग्रवालरू पश्पदीप, पृष्ठ सं, 51
3. केदारनाथ अग्रवालः गुलमेंहदी, पृष्ठ सं, 34
4. केदारनाथ अग्रवालः जो शिलाएँ तोडते है , पृष्ठ सं, 102
5. केदारनाथ अग्रवालः कहे केदार खरी–खरी, पृष्ठ सं, 30
6. केदारनाथ अग्रवालः फूल नही रंग बोलते है, पृष्ठ सं, 17, 23, 82
7. केदारनाथ अग्रवालः जो शिलाएँ तोडते है , पृष्ठ सं, 156
8. संपादक डॉ. अशोक त्रिपाठीः कहे केदार खरी खरी पृष्ठ सं. 09
9. संपादक श्री प्रकाशः केदार व्यक्तित्व और कृतित्व , पृष्ठ सं. 46
10. संपादक अशोक त्रिपाठी–कुहकी कोयल खडी पेड की देह, पृष्ठ सं. 244
11. संपादक नरेन्द्र पुंडरीक–कविता की बात–केदारनाथ अग्रवाल, पृष्ठ 117
12. केदारनाथ अग्रवाल–आग का आईना, पृष्ठ 65
13. केदारनाथ अग्रवाल, 'पंख और पतवार'–'धूप की तलवार', पृ0 सं0 27
14. केदारनाथ अग्रवाल, 'जमुन जल तुम'– 'रेत मैं हूँ– पृ0सं0 121